अध्ययन सामग्री
बी॰ए॰ (संस्कृत) पार्ट 3
प्रश्नपत्र – सप्तम
डॉ॰ मालविका तिवारी
सहायक प्राचार्य
संस्कृत विभाग
एच॰डी॰ जैन कॉलेज
आरा (वी॰कुं॰सिं॰वि॰)

वसन्ततिलका

वसन्ततिलका छन्द का लक्षण –

उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः ।

जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण, एक भगण, दो जगण और अन्त में दो गुरु हों, उसे 'वसन्ततिलका' छन्द कहते हैं। 'वसन्ततिलका' के प्रत्येक चरण में 14 अक्षर होते हैं।

उदाहरण –

ऽ ऽ ।	ऽ । ।	। ऽ ।	। ऽ ।	ऽ	ऽ
उक्ता व	सन्त ति	लका त	भजा ज	गौ	गः
तगण	भगण	जगण	जगण	गुरु	गुरु

अन्य उदाहरण –

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजश्रीः ।
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे
हा हन्त ! हन्त ! नलिनीं गज उज्जहार ॥

ऽ ऽ ।	ऽ । ।	। ऽ ।	। ऽ ।	ऽ	ऽ
रात्रिर्ग	मिष्यति	भविष्य	तिसुप्र	भा	तम्
तगण	भगण	जगण	जगण	गुरु	गुरु

ऽ ऽ ।	ऽ । ।	। ऽ ।	। ऽ ।	ऽ	ऽ
भास्वानु	देष्यति	हसिष्य	तिपङ्क	ज	श्रीः
तगण	भगण	जगण	जगण	गुरु	गुरु

S S | S | | | S | | S | S S
इत्थं वि चिन्तय तिकोश गते द्वि रे फे
तगण भगण जगण जगण गुरु गुरु

S S | S | | | S | | S | S S
हा हन्त हन्त नलिनीं ग ज उज्ज हा रे
तगण भगण जगण जगण गुरु गुरु

इस श्लोक के प्रत्येक चरण में एक तगण, एक भगण, दो जगण और अन्त में दो गुरु हैं। अतः यह 'वसन्ततिलका' छन्द है।

शिखरिणी

शिखरिणी छन्द का लक्षण —

रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी

जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक यगण, एक मगण, एक नगण, एक सगण, एक भगण तथा अन्त में एक लघु, एक गुरु हों तथा 6 एवं 11 अक्षरों के बाद यति हो उसे 'शिखरिणी' छन्द कहते हैं। इसके प्रत्येक चरण में 17 अक्षर होते हैं।

उदाहरण —

| S S S S S | | | | | S S | | | S
रसैः रु द्रैश्छिन्ना यमन सभला गः शिख रि णी
यगण मगण नगण सगण भगण लघु गुरु

अन्य उदाहरण –

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥

I S S	S S S	I I I	I I S	S I I	I	S
पृथिव्यां	पुत्रास्ते	जननि	बहवः	सन्तिस	र	लाः
यगण	मगण	नगण	सगण	भगण	लघु	गुरु
I S S	S S S	I I I	I I S	S I I	I	S
परंते	षांमध्ये	विरल	तरलो	ऽहंतव	सु	तः
यगण	मगण	नगण	सगण	भगण	लघु	गुरु
I S S	S S S	I I I	I I S	S I I	I	S
मदीयो	ऽयंत्यागः	समुचि	तमिदं	नोतव	शि	वे
यगण	मगण	नगण	सगण	भगण	लघु	गुरु
I S S	S S S	I I I	I I S	S I I	I	S
कुपुत्रो	जायेत	क्वचिद	पिकुमा	तानभ	व	ति
यगण	मगण	नगण	सगण	भगण	लघु	गुरु

इस श्लोक के प्रत्येक चरण में एक यगण, एक मगण, एक नगण, एक सगण, एक भगण तथा अन्त में एक लघु, एक गुरु है। अतः इसे शिखरिणी छन्द कहेंगे।

मन्दाक्रान्ता

मन्दाक्रान्ता छन्द का लक्षण —

मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गुरुमम्

जिसके प्रत्येक चरण में एक मगण, एक भगण, एक नगण, दो तगण तथा अन्त में दो गुरु अक्षर हों, चार अक्षरों के बाद, फिर छह अक्षरों के बाद और फिर सात अक्षरों के बाद यति हो उसे 'मन्दाक्रान्ता' छन्द कहते हैं। इस छन्द के प्रत्येक चरण में 17 अक्षर होते हैं।

उदाहरण —

S S S	S | |	| | |	S S |	S S |	S S
मन्दाक्रा	न्ताम्बुधि	रसन	गैर्मोभ	नौतौग	रु मम्
मगण	भगण	नगण	तगण	तगण	गुरु गुरु

अन्य उदाहरण —

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

S S S	S | |	| | |	S S |	S S |	S S
शान्ताका	रं भुज	गशय	नं पद्म	नाभसु	रे शम्
मगण	भगण	नगण	तगण	तगण	गुरु गुरु

S S S	S | |	| | |	S S |	S S |	S S
विश्वाधा	रं गग	नसदृ	शं मेघ	वर्णंशु	भाङ् गम्
मगण	भगण	नगण	तगण	तगण	गुरु गुरु

S S S	S | |	| | |	S S |	S S |	S S
लक्ष्मीका	न्तं कम	लनय	नं योगि	भिर्ध्यान	गं यम्
मगण	भगण	नगण	तगण	तगण	गुरु गुरु

S S S   S I I   I I I   S S I   S S I   S S

वन्दे वि ण्णुंभव भयहर सर्व लोकैक नाथम्

मगण   भगण   नगण   तगण   तगण   गुरु गुरु

अन्य उदाहरण –

आशाबन्धः कुसुमसदृशः प्रायशो ह्यंगनानाम्
सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि ।

S S S   S I I   I I I   S S I   S S I   S S

आशाब न्धः कुसु मसदृ शः प्राय शो ह्यंग ना नाम्

मगण   भगण   नगण   तगण   तगण   गुरु गुरु

S S S   S I I   I I I   S S I   S S I   S S

सद्यःपा तिप्रण यिहृद यंविप्र योगेरु णद्धि ।

मगण   भगण   नगण   तगण   तगण   गुरु गुरु

इस श्लोक के प्रत्येक चरण में एक मगण, एक भगण, एक नगण, दो तगण और अन्त में दो गुरु हैं। अतः इसे 'मन्दाक्रान्ता' छन्द कहेंगे।